बाबा बालक नाथ

मन चित लायके सुन लो प्राणी। बालक नाथ की अमर कहानी।।
चमत्कार हैं इनके निराले। कहते इनको धूणे वाले।। 1।।

आप हो जन–जन के हितकारी। आप की बाबा मोर सबारी।।
हाथ में झोली चिमटा साजे। सिंह छाला पे आप विराजे।। 2।।

हर बाधा को देते टाल। आप हो कालों के भी काल।।
आप हो बाबा जिसके साथ। उससे डरता है यमराज।। 3।।

आप हो सर्वे शक्तिमान। आप हो बाबा शिव वरदान।।
कैसे–कैसे खेल रचाये। लीला आपकी समझ ना आये।। 4।।

कहने को तो चिमटे वाले। लेकिन आप हो जग रखवाले।।
क्या पत्ता है और क्या है डाली। सारे जगत के आप हो वाली।। 5।।

आपके धूणे पर हे बाबा। जाकर जो भी सर को झुकाता।।
संकट उसको नहीं सताये। उसके निकट कभी ना आये।। 6।।

हे महादाता हे महाज्ञाता। आपहो सबके भाग्य विधाता।।
बन्द किस्मत के खोल दे ताले। जय हो बाबा धूणे वाले।। 7।।

ब्रह्मवेदी, अति महातेजा। चमुपति, भीमसेन, पटु नेता।।
नाम आपके हैं वे अन्त। आप हो बाबा परमानन्द।। 8।।

दोहा– दीन दुःखी मजबूरों का, रखते आप ख्याल।
जय हो –जय हो आपकी, हे विष्णु के लाल।। 9।।

सच्चे मन से जो भी ध्याये। माँगे मिट्टी सोना पाये।।
मनो कामना उनकी सारी। पूरी करते दूधाधारी।। 10।।

निर्धन हो या हो धनवान। आपके दर पे सबका मान।।
जिसको सारा जग ठुकराये। उसको बाबा गले लगाये।। 11।।

कल को आज करे आज को कल। पल में देते दुनिया बदल।।
ऐसी कोई भी बात नहीं । जो आपके वश में नहीं।। 12।।

हम कठपुतली आप नचाये। आप जो चाहे वो करजायें।
आपके आगे जोर कभी ना। चला है मेरे नाथ किसी का।। 13।।

जो भी आपके द्वार पे आये। मुँह माँगा फल आपसे।।
बाबा आपकी गुफा विशाल। चैत में चढ़ते झण्डे लाल।। 14।।

आप हो बाबा जिसपे राजी। दुनियां में जीते हर बाजी।।
जिसको बाबा आप मिटाये। उसको कोई बचा ना पाये।। 15।।

भगतों के संकट को हरते। बिन मांगे ही झोली भरते।।
जग के विधाता पालन हारी। जय हो आपकी हे कलाधारी।। 16।।

आप गिरा दो आप उठा दो। आप बचालो आप मिटा दो।।
आप बसे कण–कण के भीतर। आप हो हर धड़कन के भीतर।। 17।।

दोहा– बाबा बालक नाथ के भरे हुए भण्डार।
जो भी चाहे माँगना होगा ना इन्कार।। 18।।

हे कृपालु के दुःख भंजन। शिवात्मा विष्णु नन्दन।।
दुःख सुख में हो ऐसे साथी। जैसे देखो दिया बाती।। 19।।

मिट्टी का तुम सोना कर दो। सोने को मिट्टी में बदल दो।।
भगतों से तुम करते प्यार। पापी का करते संहार।। 20।।

जिसके सर पे रख दें हाथ। मेरे बाबा बालक नाथ।।
उसकी बल्ले–बल्ले कर दें। उसके नाम के हल्ले कर दें।। 21।।

जटा सुनहरी गले में सिंगी। लीला आपकी है सतरंगी।।
आपने शिव को प्रसन्न किया था। झोली चिमटा शिव ने दिया था।। 22।।

हम सेवक और आप हो स्वामी। आप हो अनहद अन्तर्यामी।।
आपके वश में कतरा–कतरा। काल को भी है आपसे खतरा।। 23।।

रोग–दोष पल में मिट जाते। जो भी आपके नाम को गाते।।
दुःख नाशक शत्रु विनाशक। आप हो बाबा सब फलदायक।। 24।।

श्रद्धा की है सारी बात। श्रद्धा में है आपका वास।।
श्रद्धा से एक फूल भी नाथ। आपको मेवा के हैं समान।। 25।।

आप हो अग्नि आप ही हो जल। आप हो धरती आप ही गगन।।
आप का ही तो खेल ये सारा। आप नहीं तो है अंधियारा।। 26।।

दोहा– आपके समिरन मात्र से मिटते सभी कलेश।
पल में बदल देते हो तुम किस्मत के लेख।।27।।

अजब निराली आपकी माया। चारों युग में शिव को पाया।।
माता पार्वती ने वर दे। बारह साल का तुम्हें बनाया।। 28।।

शिव शंकर से अमर कथा। सुनकर अमर हुए बाबा।।
आप हो बाबा शिव अवतारी। पूजे आपको दुनियां सारी।। 29।।

धरती डोले अम्बर डोले। खाने लगे हैं ये हिचकोले।।
सबके दिलों ने आज पुकारा। बाबा बालक नाथ हमारा।। 30।।

पहले जन्म में ज्योति नाम। दुजे में था बदरी नाथ।।
तीजे बात की बात सुनो अब। बालक नाथ की कथा सुनो अब।। 31।।

शिव आदेश को पूरा करने। जूनागढ़ में आप थे जन्मे।
माँ लक्ष्मी से जन्म लिया था। जूनागढ़ रोशन किया था।। 32।।

तीन वर्ष के आप जो होये। नारद जी ये कहने आये।।
होने वाले गुरू तुम्हारे । गुरू दत्तात्रेय हैं बालक प्यारे।। 33।।

नारद जी की सुन ये वाणी। आपने गुरूवर मिलन की ठानी।
एक वर्ष और आठ माह तक। गुरूवर नाम आप किये तप।। 34।।

तन को खा गये कीट पतंगे। गुरूवर ध्यान में आप थे रंगे।।
रूप आपका खत्म हुआ था। तब टीले का रूप धरा था।। 35।।

दोहा– जब गुरू दत्तात्रेय ने आपकी सुनी अबाज।
झट वो दोड़ के आ गये छोड़ के सारे काज।। 36।।

अस्त्र–शस्त्र सब आपको देकर। साथ में बाबा आपको लेकर।।
गुरूवर आपके वहां से चल कर । पहुँचे थे गिरनार पर्वत।। 37।।

आपके गुरू महाराज ने। आपको अपने ही सामने।।
दाहिने हाथ स्थान दिया। और आपको बिठा लिया।। 38।।

यह देखकर शिष्य पुराने। गुरूदेव से लगे ये कहने।।
गुरूवर आपने ये क्या किया है। पहला स्थान इसे क्यों दिया है।। 39।।

यह सुनकर गुरूवर ने लब खोले। और वो चेलों से फिर बोले।।
कौन यहाँ पर बैठने वाला। इसका फैलता होने वाला।। 40।।

तभी वहाँ पर रोती–रोती। आकर इक माई खड़ी होती।।
रोते–रोते उसने कहा ये। गुरूवर लुट गया मेरा जहाँ ये।। 41।।

गुरूवर बोले क्या हुआ है। माई ने तब उनसे कहा है।।
एक शेर ने लाल मेरा। छीन लिया है हे बाबा।। 42।।

यह सुनकर गुरूदेव ने। अपने पुराने सभी चेलों से ।।
कहा कि जाओ जल्दी जाओ। इस माई का बच्चा लाओ।। 43।।

धरती ढूँढ़ी और आकाश। ढूँढ़ लिया पूरा ब्रह्माण्ड।।
माई का बच्चा ढूँढ़ ना पाये। हार के वो सब वापस आये।। 44।।

दोहा– फिर गुरू दत्तात्रेय ने बाबा को दिया आदेश।
फौरन बाबा चल दिये पाकर के निर्देश।। 45।।

गुरूवर नाम का सुमिरन करके। गुरू की आज्ञा हृदय में धर के।।
पल में जान ली वह जगाह। जहाँ माई का बच्चा गया था।। 46।।

शेर नहीं वो था राक्षस। रूप बनाकर शेर का अकसर।।
बच्चे छीनकर ले जाता था। मार–मार कर वो खाता था।। 47।।

नाहरसिंह था उसका नाम। यही था भगतो उसका काम।।
माई का बच्चा वो खा चुका था। हड्डियां उसकी फैला चुका था।। 48।।

नाहरसिंह जब आप हुंकारा। आपने बाबा उसको मारा।।
जय हो आपकी दीन दयाला। जय हो माँ लक्ष्मी के लाला।। 49।।

बच्चे की जो पड़ी थी हड्डी। आपने उनको करके इकट्ठी।।
बाबा कैसा खेल दिखाया। उन हड्डियों में माँस चढ़ाया।। 50।।

डाल दिये बालक में प्राण। बाबा आपकी लीला महान।।
जैसा था वैसा ही बनाकर। सौंप दिया माई को लाकर।। 51।।

दोहा– तब गुरू दत्तात्रेय ने देखकर यह करामात।
नाम दिया था आपको बाबा बालक नाथ।। 52।।

गुरूवर के वे शिष्य पुराने। लगे थे आपको शीश झुकाने।।
सबने कहा तुम ही ज्येष्ठ हो। चेले आप ही सर्वश्रेष्ठ हो।। 53।।

नाम दान देकर कहा। आप से गुरूवर ने बाबा।।
चार धाम की यात्रा को जाओ। दीन दुःखी के कष्ट मिटाओ।। 54।।

गुरूदेव से पाकर आज्ञा। चल दिये करने आप यात्रा।।
पहले आप गये बंगाल। वहाँ का आपने देखा हाल।। 55।।

वहाँ पे एक बनिया था बाबा। धन के गुरूर में जो था डूबा।।
आपने तोड़ा उसका गुरूर। लीला आपकी है मशहूर।। 56।।

इसके बाद फिर चनणो लुहारी। नाम की थी वह जादुगरनी।।
आपने उसके घर पे जाकर। कहा था बाबा अलख जगाकर।। 57।।

माई कुछ भिक्षा ले आओ। साधु को भिक्षा दे जाओ।
इतना सुनकर चनणो लुहारी। आँखों में भरकर अंगारी।। 58।।

द्वार पे आकर आपसे बोली। काहे को चिल्लाता है ढ़ोंगी।।
तुझको नहीं पता ये क्या है। घर में सो रहा मेरा बेटा है।। 59।।

तेरे शोर मचाने पर। उठ गया बेटा मेरा अगर।।
मुश्किल में तू पड़ जाऐगा। उठकर बाहर वो आऐगा।। 60।।

दोहा– उस माई के मुख से सुनकर उल्टे सीधे बोले।
कहने लगे माई को तूने खो दिया अपना मोल।। 61।।

माई की सुनकर ये बात। बोले बाबा बालक नाथ।।
हे माई जा कहना मेरा। सोता रहेगा बेटा तेरा।। 62।।

इतना कहकर बालकनाथ। चल दिए वहाँ से हाफ।।
थोड़ी देर में ही वह माई। दोड़ी–दोड़ी पीछे आई।। 63।।

कहा कि बाबा माफ करो अब। मेरे लाल की जिन्दगी दो अब।।
आपके चरणों से वो लिपट कर। रोने लगी थी सिसक–सिसक कर।। 64।।

आपने उस पर दया करी। उसके बेटे को जिन्दगी दी।।
उसका भी अभिमान तोड़ा। ज्ञान से उसका नाता जोड़ा।। 65।।

इसके बाद फिर बाबा ने। लोगों को परखना छोड़ के ।।
यात्रा करने वो चल दिये। यात्रा पूरी करने वो लगे।। 66।।

चार धाम की यात्रा करके। आप जहां पर बाबा ठहरे।।
वो स्थान था साहतलाई। जहाँ थी एक रत्नो माई।। 67।।

वनखण्डी में बना झोंपड़ी। रहती थी वह माई अकेली।।
पास में गैया वो रखती थी। गैया को वो चराती थी।। 68।।

माँ रत्नो के घर में जाकर। बाबा बोले अलख जगाकर।।
भिक्षा लेकर आओ माई। यह सुनकर माँ रत्नो आई।। 69।।

दोहा– तन पे झोली हाथ में चिमटा सर पे सुनहरे बाल।
आपको देख माई के मन में जगे बहुत सबाल।। 70।।

माँ रत्नो ने आपको देखा। आपको देखके मन में ये सोचा।।
इतनी कम उम्र में ये। घूम रहा क्यों दूर–दूर पे ये।। 71।।

अपने मन में जो था सोचा। माँ रत्नो ने आपसे पूछा।।
किसने निकाला घर से तुमको। बतलादे हे बालक मुझको।। 72।।

माई की सुनकर ये बातें। बाबा फिर माई से कहते।।
घर से नहीं निकाला मुझको। मैं अपनी मर्जी से आया।। 73।।

माई कहने लगी हे बेटा। क्या तू मेरे पास रहेगा।।
माई ने प्यार से कहा जब। बाबा आपने कर दी हाँ तब।। 74।।

आपने फिर माँ रत्नो से। कहा हे माई आज अभी से।।
गैया तेरी चराऊँगा मैं। गौ पालन को जाऊँगा मैं।। 75।।

माँ रत्नो की गैया चराने। शाहतलाई में रगे थे रहने।।
इसके बदले लस्सी रोटी। आपको माई रत्नो देती।। 76।।

लेकिन आप ना लस्सी पीते। और नाहीं थे रोटी खाते।।
पोनाहारी मेरे बाबा। वायु पे करते थे गुजारा।। 77।।

माँ रत्नो की रोटी लस्सी। बाबा करने लगे इकट्ठी।।
पेड़ पे रोटी रखते छुपाकर। लस्सी का तालाब बनाकर।। 78।।

दोहा– माँ रत्नो जब बाबा को लगी मारने ताने।
तब माई को खेल दिखाते बाबा अजब निराले।। 79।।

दस वर्ष और दो माहा। बीत गये जब तुमको वहाँ।।
गोरखनाथ वहां पर आये। साथ में अपने चेले लाये।। 80।।

गोरखनाथ ने जब वहाँ। बाबा आपका नाम सुना।।
बोले वो गुरूर में आकर। पहले मिलूँगा उससे जाकर।। 81।।

आपको अपनी शक्ति दिखाने। गोरखनाथ चले अजमाने।।
जहाँ पे बाबा गैया चराते। वहीं पे गोरखनाथ हैं आते।। 82।।

गोरखनाथ और उनके चेले। बाबा जी से जाकर बोले।।
बड़ी दूर से आए चलकर। यहां रूके हैं तुम्हें देखकर।। 83।।

मैं और मेरे चेलों का दल। यहाँ रूका विश्राम के कारण।।
बालक कुछ विश्राम कराओ। हम सबके लिए आसन लाओ।। 84।।

गोरखनाथ की सुन ये बातें। गोरखनाथ से बाबा कहते।।
इस बारे में हे महाराज। सुन लो थोड़े मेरे बिचार।। 85।।

इसके काबिल मुझको जान। आप जो आये आपका मान।।
लेकिन हे गोरख महाराज। आसन खुद ना है मेरे पास।। 86।।

धरती माता से बढ़कर के। दूजा नहीं कोई आसन जग में।।
जहां पे मैं बैठा महाराज। आप भी जाओ वहीं विराज।। 87।।

दोहा– धरती माँ की गोद से बड़ा न आसन कोई।
इस माता की गोद में सारी दुनियां सोये।। 88।।

बाबा की सुनकर ये बात। क्रोध में बोले गोरखनाथ।।
क्या तुमको मैं और मेरे चेले। लगे जमीं पर बैठने वाले।। 89।।

गोरखनाथ के सुनके विचार ये। सोच के बाबा बालक नाथ ने।।
कपड़े का इक टुकड़ा उठाया। जमीं पे उस टुकड़े को बिछाया।। 90।।

जमीं पे उस टुकड़े को बिछाकर। गोरखनाथ को तुमने बुलाकर।।
कहा कि हे सन्तो महाराजो। आसन लगा है जल्दी विराजो।। 91।।

यह नजारा देख के बोले। गोरखनाथ और उनके चेले।।
कपड़े के छोटे टुकड़े पे। बैठेंगे हम सब भला कैसे।। 92।।

बाबा जी फिर बोले हंसकर। देखो तो जरा इसपे बैठ पर।।
बाबा जी की सुन ये बात। लगे बैठने गोरखनाथ।। 93।।

जैसे ही गोरखनाथ ने। उस कपड़े के टुकड़े पे।।
भगतो अपना पैर रखा था। कपड़ा वो बड़ा होने लगा था।। 94।।

गोरखनाथ के साथ में चेले। इक–इक कर के लगे बैठने।।
उनके बैठते ही वो टुकडा। अपने आप ही हो गया बड़ा।। 95।।

आपने ऐसी रची थी माया। उस टुकड़े पे सबको बिठाया।।
आपकी माया को जब देखा। गोरखनाथ भी सोच में डूबा।। 96।।

दोहा– धन्य–धन्य हे परमानन्द, है आपकी महिमा अपार।
देख जिसे सदके में आ गये गोरखनाथ।। 97।।

उस कपड़े पे फिर बैठ के। गोरखनाथ जी ने आपसे।।
कहा कि अब भोजन तो खिला दो। भूख लगी है भोजन तो ला दो।। 98।।

आपने बाबा उनसे कहा। रोटी नहीं हूँ मैं खाता।।
मैं तो केवल दूध पीता हूँ। वायु पे गुजारा करता हूँ।। 99।।

इस पर गोरखनाथ जी ने। कहा कि जो है पास में तेरे।।
बालक वही तू मुझको लादे। भूख लगी है कुछ तो खिला दे।। 100।।

इतना सुनकर बालकनाथ। इक गैया के गये वो पास।।
उन्होंने उस गैया से कहा। दूध से भर दे कमंडल माँ।। 101।।

बाबा की सुनकर आबाज। थनों से निकली दूध की धार।।
जब कमंडल भर वो गया। बाबा जी ने उठा वो लिया।। 102।।

बड़े प्यार से बाबा जी ने। कहा था गोरखनाथजी से।।
अपने चेलों को ले आओ। पेट भरकर दूध पिलाओ।। 103।।

बाबा जी की सुन ये बात। हंसकर बोले गोरखनाथ।।
इस थोड़े से दूध में। पेट भरोगे किस–किस के।। 104।।

इसके जबाब में बाबा ने। कहा था गोरखनाथजी से।।
दूध तो पीना शुरू करलो। कमी लगे तो और भी लेलो।। 105।।

दोहा– पीने लगे फिर दूध को, जमकर चेले खूब।
पीते–पीते भर गये पेट, खत्म हुआ ना दूध।। 106।।

एक कमंडल से बाबा। सबको दिया था दूध पिला।।
हुआ नहीं था कमंडल खाली। महिमा आपकी बड़ी निराली।। 107।।

बबा आपकी महिमा जान। गोरखनाथ हुए हैरान।।
गोरखनाथ ने मन से सोचा। इसको बना लूँ अपना चेला।। 108।।

अपने मन में जो था सोचा। गोरखनाथ ने आपसे बोला।।
बालक बन जो चेला मेरा। कर दूँगा मैं नाम तेरा।। 109।।

इसके जबाब में बड़े प्यार से। कहा आपने गोरखनाथ से।।
मेरे गुरू दत्तात्रेय हैं प्यारे। वही हैं बस भगवान हमारे।। 110।।

आपका करता हूँ सम्मान। लेकिन आप लो इतना जान।।
चेला अपका मैं ना बनूँगा। अपने गुरू को ना छोड़ूँगा।। 111।।

बाबा ने इन्कार किया। गोरखनाथ का क्रोध बड़ा।।
बाबा से सुनकर इन्कार। हठ पे अड़ गये गोरखनाथ।। 112।।

क्रोध में गोरखनाथ ने। बाबा को एक खुण्ड में।।
देखो भगतो बन्द कर दिया। और ऊपर पत्थर रख दिया।। 113।।

बाबा ने वो खेल दिखाया। गोरखनाथ का सर चकराया।।
बिना हटाये खुण्ड से पत्थर। निकल आये बाबा बाहर।। 114।।

दोहा– वायु रूप बनाकर के, खूब रची थी माया।
निकल गये थे खुण्ड से बाहर, पत्थर नहीं हटाया।। 115।।

गोरखनाथ हुए नाकाम। लेकिन कम ना हुआ गुमान।।
गोरखनाथ के हर जाल से। गोरखनाथ की हर चाल से।। 116।।

गोरखनाथ को जब कोई। रास्ता सुझा ही था नहीं।।
तब फिर गोरखनाथ ने। साहतलाई स्थान में।। 117।।

अपना मायाजाल बिछाया। उस जाल की यह थी माया।।
जहाँ पे बाबा गैया चराते। वहाँ के सारे खेत उजाड़े।। 118।।

गैया अगर चरती इक खेत। खाली होते दस–दस खेत।।
यह देख उन खेतों के। मालिक आकर भड़क उठे।। 119।।

बाबा को वो आके वहा। कहने लगे थे बुरा भला।।
इसी बीच में लस्सी रोटी। लेकर मांई रत्नो आ जाती।। 120।।

जमींदार मिलकर के सारे। माँ रत्नों को उल्हाने मारे।।
तेरे इसी ग्वाले के कारण। उजड़ गये खेत हमारे।। 121।।

लोगों से सुनकर ये बुराई। आप से बोली रत्नो माई।।
बारह वर्ष तक इस लिए क्या। तुझको रोटी लस्सी पिलाई।। 122।।

माँ रत्नो की सुनके ये बात। बोले बाबा बालकनाथ।।
तेरी रोटी लस्सी माई। मैंने कभी भी नहीं है खाई।। 123।।

दोहा– बाबा बालकनाथ के भरे हुए भण्डार।
जो भी चाहे मांगना, होगा ना इन्कार।। 124।।

बाबा ने फिर चिमटा लिया उठा। चिमटा जीम में दिया गड़ा।।
गाड़ के चिमटा जैसे उखाड़ा। जमीं से निकली लस्सी की धारा।। 125।।

फिर चिमटे को पेड़ में गाड़ा। उस चिमटे से पेड़ को फाड़ा।।
पेड़ से निकली झर–झर रोटी। माँ रत्नों बड़ी चकित सी होती।। 126।।

बाबा ने माई रत्नो से। कहा फिर बड़े ही प्यार से।।
बारह साल की रोटी लस्सी। ले जा माई करके इकट्ठी।। 127।।

भूल पे अपनी होके खफा। दुःखी हुई थी रत्ना माँ।।
भूल हुई पहचान ना पाई। रो–रो कहती रत्नो माई।। 128।।

इसी बीच में पाकर मौका। गोरखनाथ वहाँ आ पहुँचा।।
चेले फिर से साथ में लाया। बाबा जी को पकड़ने आया।। 129।।

गोरखनाथ ने जाके वहाँ। अपने चेलों से ये कहा।।
पकड़ो जाकर इस बालक को। छोड़ना मत इस गौ पालक को।। 130।।

गोरखनाथ के चेले झपट के। बाबा को जब लगे पकड़ने।।
उड़ गये बाबा हवा के साथ। देखते रह गये गोरखनाथ।। 131।।

वहाँ से उड़कर बालक नाथ। चकमोह नामक ग्राम के पास।।
घुस गये देखो गुफा के अन्दर। बैठे हो धूनी लगाकर।। 132।।

दोहा– मन चित लाय के चरणों में, जो भी ध्यान लगाये।
बाबा बालकनाथ जी उसकी बिगड़ी बनाये।। 133।।

पीछा करते–करते वहाँ। गोरखनाथ भी पहुँच गया।।
गोरखनाथ और उसके चेले। दूजी तरफ थे बाबा अकेले।। 134।।

गोरखनाथ ने उनसे कहा। वहाँ से बच गया तो क्या।।
यहाँ तू बालक नहीं बचेगा। आज तू मेरा चेला बनेगा।। 135।।

गोरखनाथ की सुन ये बात। बोले बाबा बालकनाथ।।
ये भी इच्छा करले पूरी। रहना जाए कभी अधूरी।। 136।।

इतना सुनकर गोरखनाथ ने। चेले थे जो उसके साथ में।।
क्रोध में आकर उन से कहा। इस बालक को पकड़ो जरा।। 137।।

गोरखनाथ के पाके इशारे। झपटे पड़े थे चेले सारे।।
सबने जाकर घेर लिया। बाबा जी को पकड़ लिया।। 138।।

कानों में मुद्रा पहनाने। आपको अपना चेला बनाने।।
गोरखनाथ ले मुद्रायें। बाबा आपके पास में आये।। 139।।

क्रोध में गोरखनाथ ने। बालकनाथ के कानों में।।
घोंपा जैसे मुद्रा तार। कान से निकली दूध की धार।। 140।।

बाबा की यह देखके महिमा। गोरखनाथ को आया पसीना।।
समझ में उसकी कुछ ना आये। गोरखनाथ बडे घबराये।। 150।।

दोहा– बालकनाथ जी की महिमा और शक्ति देख अपार।
भगतो गोरखनाथ जी मन में करें विचार।। 151।।

गोरखनाथ के चेले सारे। काँप रहे थे डर के मारे।।
कानों से भाई जगह खून की। कैसे निकल गयी धार दूध की।। 152।।

गोरखनाथ ने इसके बाद। बाबा को दिया कुँए में डाल।।
बाबा ने वो खेल दिखाया। कुँए का सारा पानी सुखाया।। 153।।

ऐसे निकल गये बाहर कुँए से। कुँए में जैसे गिरे नहीं थे।।
फिर वहां से मार उड़ारी। उड़ गये फिर बाबा कलाधारी।। 154।।

इस पर गोरखनाथ ने। अपने चेले भरथरी से।।
कहा भरथरी जल्दी जाओ। उस बालक को पकड़ के लाओ।। 155।।

वहाँ से उड़कर बालकनाथ। इक बरगद के पहुँचे पास।।
जाकर बैठे पेड़ के नीचे। धूनी रमाए आँखे मींचे।। 156।।

गोरखनाथ का चेला वहाँ। राजा भरथरी पहुँच गया।।
उसने जाकर वहाँ जो देखा। दर्श बड़ा था वह अनूठा।। 157।।

शेषनाग सर पे ठहराया। बाबा को कर रहा था छाया।।
राजा भरथरी जान गया था। बाबा को पहचान गया था।। 158।।

राजा भरथरी आपसे बोला। मुझको बना लो अपना चेला।।
माया आपकी जान गया हूँ। आपको मैं पहचान गया हूँ।। 159।।

दोहा– मुझसे मूर्ख अज्ञानी को, प्रभू सिखा दो ज्ञान।
मुझ पर भी कर दो कृपा, दाता दया निधान।। 160।।

मेरी भूल को कर दो क्षमा। अपनी शरण लो मुझे लगा।।
हे महादानी हे महाज्ञानी। शरण पड़ा हूँ मैं अभिमानी।। 161।।

राजा भरथरी की सुन बात। बोले बाबा बालकनाथ।।
किसी को अपना चेला बनाना। गुरूवर ने आदेश दिया ना।। 162।।

लेकिन आप अगर चाहो। साथ में मेरे रह जाओ।।
मुझको नहीं कोई आपत्ति। बाकी आपकी है मर्जी।। 163।।

राजा भरथरी कहने लगा। साथ बैठकर होगा क्या।।
जब तक मुझको आप हे नाथ। गुरू भगति का ना दोगे पाठ।। 164।।

इसके जबाब में बाबा ने। कहा था राजा भरथरी से।।
इक छोटी सी बात ये सुनलो। ध्यान मेरी बात यह सुनलो।। 165।।

असली गुरू तो वही हैं होते। जिसके साथ में रहते–रहते।।
बिन माँगे ही सारा ज्ञान। चेले में बस जाता आन।। 166।।

बाबा की सुनकर ये बात। राजा भरथरी करे बिचार।।
अपने मन में उसने सोचा। अच्छा है रहने का मौका।। 167।।

लेकिन मजबूरी थी पास। उसके गुरू थे गोरखनाथ।।
उसने उनको किया था धारण। वेवस था वो इसी के कारण।। 168।।

दोहा– गुरू धारण के कारण ही वो बैठ सके ना पास।
राजा भरथरी मन ही मन होने लगे उदास।। 169।।

इसी बात को ध्यान में लाकर। बाबा जी के पास में जाकर।।
बाबा को वो कर प्रणाम। चल दिये गोबिन्द धाम।। 170।।

जहाँ पे गुरू गोरखनाथ ने। सब चेलों को साथ में।।
डेरा था अपना लगाया। चेला भरथरी वहाँ पे आया।। 171।।

जाकर भरथरी चेले ने। अपने गुरूवर गोरखनाथ से।।
कहा कि मैं नाकाम रहा हूँ। उसको पकड़ कर ला न सका।। 172।।

मेरी मानो तो गुरूवर। उस बालक को छेड़ो उस पर।
बालक नहीं है वो गुरूदेव। वो तो साक्षात है महादेव 173।।

आपने उस बालक पर नाथ। जितने डाले अब तक जाल।।
सब में आपको मात मिली। मुह की आपको खानी पड़ी।। 174।।

इसीलिए कहता हूँ गुरूवर। काबू रख लो अपने क्रोध पर।।
छोड़ भी दोना ये तकरार। मन में बसालो अपने प्यार।। 175।।

सुन के भरथरी की ये बात। क्रोध में बोले गोरखनाथ।।
तू मेरा चेला है या उसका। करदे फैसला जल्दी इसका।। 176।।

एक जरा से बालक को। पकड़ने भेजा था तुझको।।
उसको तो तू पकड़ ना पाया। उल्टा ज्ञान सिखाने आया।। 177।।

दोहा– क्रोध पे काबू रख नहीं, पाये गोरखनाथ।
अपने भरथरी चेले से, करने लगे संबाद।। 178।।

दूर मेरी नजरों से हो जा। चुल्लू भर पानी में डूब जा।।
गुरूमन्त्र से तुझको आज। कर दिया मैंने आजाद।। 179।।

अगर वह बालक ही तुझको। इतना ही ज्यादा प्यारा तो।।
जा उसको ही गुरू बना। अब तू यहाँ से हो जा दफा।। 180।।

साथ में हरदम मेरे रहता। गुण तू उस बालक के गाता।।
गोरखनाथ ने जब ये कहा। चेला भरथरी चला गया।। 181।।

इसके बाद में गोरखनाथ। बालकनाथ जी के पास।।
प्यारे भगतो चले गये। जाकर के बाबा से कहे।। 182।।

अपने आप को बालक तू। समझ रहा है भगवान क्यों।।
मेरे इस चेले को डरा। काहे को तू रहा इतरा।। 183।।

अब ऐसे नहीं काम चलेगा। आज फैसला होके रहेगा।।
कौन आज जीतेगा बाजी। कौन आज हारेगा बाजी।। 184।।

गोरखनाथ की सुन ये वाणी। बोले बाबा चिमटाधारी।।
ना ही किसी को मैंने डराया। ना ही खुद पे मैं इतराया।। 185।।

अपने चेले भरथरी को। भेजा था मुझे पकड़ने को।।
उसने किया जो उसका था काम। मैंने किया जो मेरा था काम।। 186।।

रही बात अब जीत हार की। हूँ तैयार मैं इसके लिए भी।।
आपकी है गर इच्छा यही। उसमें भी मैं पीछे नहीं।। 187।।

बाबा की सुनकर ये बात। सुध खो बैठे गोरखनाथ।।
गोरखनाथ का चढ़ गया पारा। क्रोध में वो बन गये अंगारा।। 188।।

दोहा– क्रोध में गोरखनाथ जी भूल गये हर बात।
अंगारों की बाबा पर लगे करने बरसात।। 189।।

अंगारे जब लगे बरसने। बाबा जी पर लगे थे गिरने।।
अंगारों की देख ये बर्षा। बाबा जी ने उठाया चिमटा।। 190।।

बाबा ने जब चिमटा उठाया। आसमान में बादल छाया।।
लगे गरजने जोर से बादल। आसमान में छा गयी हलचल।। 191।।

होने लगी पानी की वर्षा। तीर के जैसे पानी बरसा।।
कर दिये सब अंगरे शांत। ताकते रह गये गोरखनाथ।। 192।।

पैरों के नीचे से जमीं। गोरखनाथ के खिसक गयी।।
बेचैनी सी छा गयी तन में। देख रहे वो नील गगन।। 193।।

हँसकर बोले बाबा मेरे। भगतो गोरखनाथ जी से ।।
ये तो इक छोटी सी झलक है। अभी से काहे को पागल है।। 194।।

बाबा की सुनकर ये बात। ऐसे भुन गये गोरखनाथ।।
जैसे जलती आग में। जाकर घी कोई डाल दे।। 195।।

गोरखनाथ ने इसके बाद। जिस आसन पे थे वो सबार।।
अपने आसन मृगछाला को। हाथ में लेकर सिंह छाला को।। 196।।

हाथ में लेकर वह मृगछाला। आसमान में उसको उछाला।।
मृगछाला आसमान में जाकर। अटक गयी थी घेरा बनकर।। 197।।

क्रोध में आकर गोरखनाथ। जाकर के बाबा के पास।।
बोला अपना चिमटा उठाले। मृगछाला को नीचे ला दे।। 198।।

तेरे गुरू के दिये हुए। अगर तेरे इस चिमटे में।।
शक्ति हो तो मुझे दिखा दे। मृगछाला को नीचे ला दे।। 199।।

दोहा– इतना सुनकर बाबा ने, उठाया चिमटा नुकीला।
गोरखनाथ को बाबा ने, अजब दिखाई लीला।। 200।।

बाबा ने फिर चिमटा उठाया। आसमान में चिमटा उछाला।।
मृगछाला के टुकडे हजार। करके जमीं पे दिये डाल।। 201।।

हैरत में थे गोरखनाथ। देख आपकी ये करामात।।
आपकी सूरत देख रहे थे। हुआ ये क्या वो सोच रहे थे।। 202।।

यह देखकर बाबा मेरे। खिल–खिलाकर हँस पड़े।।
हँसते–हँसते करने लगे वो। गोरखनाथ जी से बातें।। 203।।

आपकी मृगछाला तो मैंने। गोरखनाथ जी लादी नीचे।।
लेकिन देखो यह चिमटा मेरा। रह गया देखो आसमान में।। 204।।

मैंने तो मृगछाला उतारी। लेकिन अब है आपकी बारी।।
आप भी कुछ कर्तव्य दिखालाओ। मेरा चिमटा वापस लाओ।। 205।।

बाबा जी की सुन ये बात। समझ गये थे गोरखनाथ।।
चिमटे को नहीं कह रहा ये। अब मुझको अजमा रहा ये।। 206।।

गोरखनाथ ने माया बल से। जोर लगाये बड़े ही जम के।।
लेकिन चिमटा हिला सके ना। जमीं पे वापस ला सके ना।। 207।।

जोर लगाकर के भी सारा। उतार सके ना चिमटा प्यारा।।
गोरखनाथ ने तब कहा। जादू की है ये माया।। 208।।

गोरखनाथ ने जैसे ही। बाबा को यह बात कही।।
उतर तभी चिमटा आकाश से। आ गया बाबा जी के हाथ में।। 209।।

गोरखनाथ सोच में पड़ गये। सोच समझ की धुन में अड़ गये।।
मैंने तो बड़ा जोर था मारा। इस बालक ने पल में उतारा।। 210।।

दोहा– बाबा से हर खेल में, खा रहे गोरख मात।
मिलकर बोले प्रेम से , जय–जय बालकनाथ।। 211।।

गोरखनाथ जी ने इसके बाद। करने लगे पत्थर बरसात।।
लगे बरसने कंकड़ पत्थर। पहुँचे नहीं लेकिन बाबा तक।। 212।।

बाबा ने वह खेल दिखाया। पत्थर थे जो फूल बनाया।।
धूल को खुशुबू में बदल दी। वर्षा वहाँ फूलों की कर दी।। 213।।

गोरखनाथ ये समझ ना पाये। पत्थर कैसे फूल बनाये।।
मैंने तो पत्थर बरसाये। फूल ये कैसे बनकर आये।। 214।।

गोरखनाथ की जब कोई। बाबा पर ना चाल चली।।
गोरखनाथ ने तब वहाँ। अपने गुरू को बुला लिया।। 215।।

भगतो गोरखनाथ जी के। गुरू मछेन्द्रनाथ जी थे।।
गोरखनाथ की सुन आबाज। आ गये गुरू मछेन्द्रनाथ।। 216।।

अपने गुरू को सिर को झुका। अपने गुरू से उन्होंने कहा।।
गुरूदेव इस बालक को। चेला दो मेरा बनवा।। 217।।

इस जरा से बालक ने। चेले मेरे डरा दिये।।
इसको न चिन्ता अपनी जान की। इसको है परवाह मान की।। 218।।

गोरखनाथ की सुन ये बात। बोले गुरू मछेन्द्रनाथ।।
बालक नहीं है ये नादान। ये तो खड़े हैं शिव भगवान।। 219।।

दोहा– गुरू मछेन्द्रनाथ ने , जोड़ के दोनों हाथ।
बाबा जी के चरणों में, भगतो किया प्रणाम।। 220।।

यह नजारा देखा जो। भगतो गोरखनाथ ने तो।।
भूल पे होके वो शर्मिन्दा। माँग रहे थे क्षमा याचना।। 221।

सर को झुका कर आपके पास। आकर बोले बालकनाथ।।
हे परमानन्द महामना। आपको मैंने ना पहचाना।। 222।।

आपको मैं पहचान न पाया। समझ सका ना आपकी माया।।
खुद पर मैंने किया गुमान। माफ करो हे दयानिधान।। 223।।

तभी गुरू मछेन्द्रनाथ। साथ में उनके गोरखनाथ।।
दोनों ने मिलकर बाबा की। श्रद्धा से की आरती।। 224।।

ओम जय कलाधारी हरे। मिलकर दोनों वो गाने लगे।।
फिर बाबा को कर प्रणाम। चल दिये दोनों अपने धाम।। 225।।

धन्य–धन्य आपकी माया। इसका कोई भी पार न पाया।।
गोरखनाथ के अंहकार को। आपने पल में तोड़ गिराया।। 226।।

इसके बाद फिर बाबा मेरे। वापस गुफा में वो आ गये।।
धूणा गुफा में फिर से रमा के। बाबा तपस्या करने लगे।। 227।।

बाबा की थी गुफा जहाँ पर। वहीं से कुछ दूरी पर चलकर।।
चकमोह नामक ग्राम हुआ था। वहाँ की सुन लो दास्ता।। 228।।

उसी गाँव में भगतो वहाँ। एक ग्वाला रहता था।।
नाम था उसका बनरसीदास। गायें भैंस रखता था पास।। 229।।

आँखों से था वो बेनूर। नेत्र हीनता से मजबूर।।
बाबा जी की गुफा के पास। चराता था गैया को घास।। 230।।

दोहा– एक बार कुछ गैया उसकी, चरते–चरते घास।
जहाँ पे थी बाबा की गुफा, आ गयी गुफा के पास।। 231।।

उधर वहाँ से बनरसीदास। रहा था उन गैयों को पुकार।।
देता–देता उनको आबाज। आ गया वो भी गुफा के पास।। 232।।

गैयों की जब सुनी आबाज। आ गये गुफा से बाबा बाहर।।
इतने में देता आबाज। आ गया वहाँ बनारसीदास।। 233।।

बालकनाथ ने बड़े प्यार से। कहा था बनारसीदास से।।
क्या यह गैया तुम्हारी है। जो यहाँ पर आ गई है।। 234।।

बाबा जी से उसने कहा। हाँ यह मेरी हैं गैया।।
इनको ही मैं ढूँढ़ रहा था। इनकी तलाश में घूम रहा था। 235।।

बाबा ने फिर उसको कहा। अपनी गैया का तू जरा।।
मुझको थोड़ा दूध पिला दे। भूख लगी भूखा मिटा दे।। 236।।

बाबा की सुनकर ये बात। बोला ग्वाला बनारसीदास।।
लेकिन ये गैया तो मेरी। बाबा दूध नहीं है देती।। 237।।

कहने लगे बाबा उसको। कोशिश तो तुम करके देखो।।
बाबा की सुनकर ये बात। बोला ग्वाल बनारसीदास।। 238।।

दूध निकालूँगा मैं कैसे। देख नहीं सकता हूँ मैं।।
अँखियों से हूँ मै मजबूर। कैसे निकाल के लाऊँ दूध।। 239।।

बाबा ने सुनकर ये बात। सर पे रख दिया उसके हाथ।।
ग्वाले बनारसीदास की। नूर से आँखें चमक उठी थी।। 240।।

गैयों पे इक नजर जो डाली। थन से निकलती दूध की धारी।।
बनारसीदास ने जब देखा। वो तो खुशी से झूम उठा।। 241।।

दोहा– जय हो आपकी संकट को, हरने वाले नाथ।
दीन दुःखी मजबूरों पे, आप करें उपकार।। 242।।

बाबा जी के पास वो जाकर। बोला चरनन शीश नवाकर।।
मेरा कष्ट आपने हरा। अब और भी कर दो दया।। 243।।

मुझको अपना दास बना लो। मुझको अपनी शरण लगालो।।
हे सुरनन्दन महा प्रकाश। मैं तो हो गया आपका दास।। 244।।

फिर बाबा ने उसको कहा। पूरी हो गई तेरी इच्छा।।
आज से मेरे धुणे की। करनी है तुझको सेवा।। 245।।

उसको देकर के वरदान। हो गये बाबा अन्तर्ध्यान।।
अमर–अमर है आपकी गाथा। जय हो बाबा बालकनाथा।। 246।।

शाहतलाई में गुफा विशाल। चैत्र में लगता मेला कमाल।।
चैत्र महीने में सब जाते हैं। लेकर भगतो झण्डे लाल।। 247।।

दोहा–बाबा बालकनाथ के, भरे हुए भण्डार।
जो भी चाहो मांगना, होगा ना इन्कार।। 248।।